खाद्य अपशिष्ट सूचकांक रिपोर्ट 2024

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) और WRAP (अपशिष्ट और संसाधन कार्रवाई कार्यक्रम) ने संयुक्त रूप से खाद्य अपशिष्ट सूचकांक रिपोर्ट 2024 प्रकाशित की है।

संबंधित प्रमुख बिंदु

- रिपोर्ट "खाद्य अपशिष्ट" को "मानव खाद्य आपूर्ति श्रृंखला से हटाए गए भोजन और संबंधित अखाद्य भागों" के रूप में परिभाषित करती है। दूसरी ओर, "खाद्य हानि" को "सभी फसल और पशुधन मानव-खाद्य वस्तु मात्रा" के रूप में परिभाषित किया गया है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, कटाई के बाद/वध उत्पादन/आपूर्ति श्रृंखला से पूरी तरह से बाहर निकल जाते हैं।

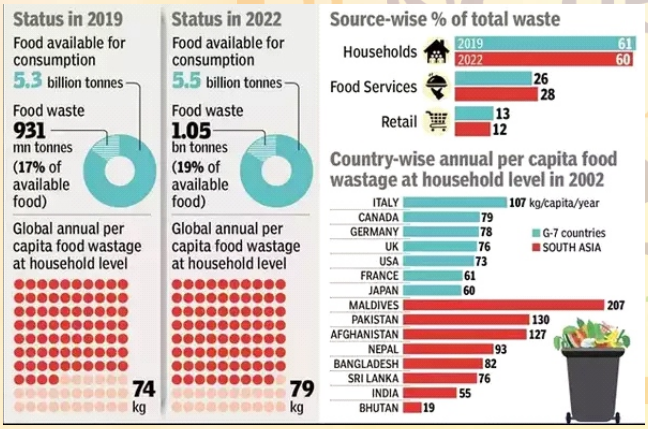

- अंतर्राष्ट्रीय शून्य अपशिष्ट दिवस (30 मार्च) से पहले जारी की गई रिपोर्ट में कहा गया है कि वर्ष 2022 में, 1.05 बिलियन टन खाद्य अपशिष्ट (अखाद्य भागों सहित) उत्पन्न हुआ था, जो प्रति व्यक्ति 1 3 2 किलोग्राम और लगभग पांचवां हिस्सा उपभोक्ताओं के लिए सभी खाद्य पदार्थ उपलब्ध हैं।
- दुनिया भर में परिवारों ने 2022 में एक दिन में एक अरब से अधिक भोजन बर्बाद किया, जबकि 783 मिलियन लोग भूख से जूझ रहे थे और मानवता के एक तिहाई हिस्से को खाद्य असुरक्षा का सामना करना पड़ा।
- रिपोर्ट में खाद्य अपशिष्ट की ट्रैकिंग और निगरानी को सक्षम करने के लिए डेटा बुनियादी ढांचे के विस्तार और मजबूत करने के महत्व पर जोर दिया गया है, जिसमें बताया गया है कि " 2030 तक भोजन की बर्बादी, विशेषकर खुदरा और खाद्य सेवाओं में कई निम्न और मध्यम आय वाले देशों में सतत विकास लक्ष्य 12.3 को पूरा करने के लिए प्रगति पर नज़र रखने के लिए पर्याप्त प्रणालियों का अभाव है।
- लोकप्रिय धारणा के विपरीत, भोजन की बर्बादी एक 'अमीर देश की समस्या' नहीं थी, रिपोर्ट में कहा गया है, उच्च आय, उच्च-मध्यम और निम्न-मध्यम आय वाले देशों के लिए घरेलू भोजन बर्बादी के प्रति व्यक्ति औसत स्तर में केवल 7 किलोग्राम का अंतर देखा गया है।
- खाद्य अपशिष्ट और जलवायु परिवर्तन के बीच संबंध का विवरण देते हुए, रिपोर्ट में पाया गया कि भोजन की हानि और अपशिष्ट से "वार्षिक वैश्विक ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी) उत्सर्जन का 8-10% है | इससे विमानन क्षेत्र का लगभग 5 गुना और दुनिया की लगभग एक तिहाई कृषि भूमि के बराबर महत्वपूर्ण जैव विविधता का नुकसान होता है। ।"
- इसके आंकड़ों के अनुसार शहरी क्षेत्रों की तुलना में, ग्रामीण इलाकों में आम तौर पर कम भोजन बर्बाद होता है, जिसका कारण "पालतू जानवरों, पशुधन और घरेलू खाद बनाने के लिए भोजन के बचे हुए हिस्से का अधिक उपयोग" होता है।

सेना कमांडरों का सम्मेलन 2024

सुर्ख़ियों में क्यों?

- 28 मार्च 2024 को सेना कमांडरों का सम्मेलन वर्चुअल मोड में आयोजित किया गया | उसके बाद 01 और 02 अप्रैल 2024 को नई दिल्ली में फिजिकल मोड में आयोजित किया जाएगा।

संबंधित प्रमुख बिंदु

- गौरतलब है कि सेना कमांडरों का सम्मेलन भारतीय सेना के शीर्ष नेतृत्व के लिए वैचारिक मुद्दों पर विचार-मंथन करने, समग्र सुरक्षा स्थिति की समीक्षा और आकलन करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में

कार्य करता है। इसका उद्देश्य यह भी सुनिश्चित करना था कि भारतीय सेना प्रगतिशील, दूरदर्शी, अनुकूली और भविष्य के लिए तैयार रहे।

- सेना कमांडरों के सम्मेलन के दौरान चर्चा किए जाने वाले प्रमुख मुद्दों में सेना की उत्तरी कमान में तैनाती के साथ-साथ त्रि-सेवा एकीकरण का पुनर्मूल्यांकन भी शामिल है।
- सम्मेलन में पूर्वी लद्दाख के साथ-साथ जम्मू-कश्मीर में पीर पंजाल रेंज के दक्षिण के क्षेत्रों में तैनाती के लिए परिवर्तन पर चर्चा की जाएगी और योजनाओं को अंतिम रूप दिए जाने की संभावना है।
- इन सत्रों का उद्देश्य परिचालन प्रभावशीलता को बढ़ाना, नवाचार और अनुकूलनशीलता की संस्कृति को बढ़ावा देने का महत्व और भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयारी सुनिश्चित करने के लिए प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रमों में निवेश करना है।
- विचार-मंथन सत्र में सैनिकों और उनके परिवारों के लिए जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने के उद्देश्य से सेवा कर्मियों के कल्याण से संबंधित मुद्दे भी शामिल होंगे।
- इसके बाद सीओएएस की अध्यक्षता में आर्मी ग्रुप इंश्योरेंस की निवेश सलाहकार समिति की बैठक होगी, जिसमें वित्तीय प्रबंधन के क्षेत्र के कई विशेषज्ञ भाग लेंगे। समिति सेवारत सैनिकों, पूर्व सैनिकों और उनके परिवारों की वित्तीय सुरक्षा के लिए विभिन्न कल्याणकारी उपायों और योजनाओं पर विचार-विमर्श करेगी।

भारतीय तट रक्षक जहाज - समुद्र पहरेदार

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भारतीय तटरक्षक जहाज - समुद्र पहरेदार का दौरा किया, जो आसियान देशों में विदेशी तैनाती के हिस्से के रूप में फिलीपींस के मनीला खाड़ी में है।

संबंधित प्रमुख बिंदु

- भारतीय तट रक्षक जहाज समुद्र पहरेदार भारतीय तट रक्षक द्वारा संचालित एक विशेष प्रदूषण नियंत्रण पोत (पीसीवी) है। इसे मुख्य रूप से समुद्र में प्रदूषण प्रतिक्रिया के लिए डिज़ाइन और उपयोग किया जाता है।
- इसका मुख्य मिशन समुद्री क्षेत्रों में तेल रिसाव और अन्य पर्यावरणीय प्रदूषकों को कम करना और नियंत्रित करना है।
- इस जहाज का निर्माण भारत के सूरत में स्थित एबीजी शिपयार्ड द्वारा किया गया था। यह भारतीय जहाज निर्माण विशेषज्ञता का एक उत्पाद है, जिसे तटीय प्रदूषण नियंत्रण की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तैयार किया गया है।
- यह आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम में स्थित भारत के पूर्वी तट पर तैनात है। यह रणनीतिक स्थान भारत की पूर्वी समुद्री सीमाओं पर प्रदूषण की घटनाओं पर त्वरित तैनाती और प्रतिक्रिया की अनुमति देता है।
- यह जहाज अत्याधुनिक प्रदूषण प्रतिक्रिया और नियंत्रण उपकरणों से सुसज्जित है। इसमें हाई-स्प्रिंट बूम और रिवर बूम जैसे रोकथाम गियर, स्कीमर और साइड स्वीपिंग आर्म्स जैसे रिकवरी डिवाइस शामिल हैं।
- पोत में एक एकीकृत प्लेटफ़ॉर्म प्रबंधन प्रणाली है, जो विभिन्न शिपबोर्ड प्रणालियों का केंद्रीकृत नियंत्रण और निगरानी प्रदान करती है।
- इसमें एक मजबूत बिजली प्रबंधन प्रणाली को जहाज के बुनियादी ढांचे में एकीकृत किया गया है, जो प्रदूषण नियंत्रण गतिविधियों सहित जहाज पर संचालन के लिए विश्वसनीय और निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करता है।
- जहाज में एक जुड़वां इंजन वाले ALH (उन्नत हल्के हेलीकॉप्टर) या चेतक हेलीकॉप्टर को समायोजित करने की क्षमता है।

भारत टीबी रिपोर्ट 2024

सुर्ख़ियों में क्यों?

- केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने हाल ही में भारत टीबी रिपोर्ट 2024 जारी की है।

रिपोर्ट से संबंधित प्रमुख बिंदु

- भारत में तपेदिक का शीघ्र पता लगाने और उपचार शुरू करने के प्रयासों के साथ-साथ कई सामुदायिक सहभागिता प्रयासों के परिणामस्वरूप टीबी की घटनाओं (हर साल सामने आने वाले नए मामले) में वर्ष 2015 तक 16% की गिरावट आई है और टीबी के कारण मृत्यु दर में 18% की कमी आई है।
- भारत में टीबी की घटना दर 2015 में 237 प्रति लाख जनसंख्या से गिरकर 2022 में 199 प्रति लाख जनसंख्या हो गई है, जबकि मृत्यु दर 2015 में 28 प्रति लाख जनसंख्या से घटकर 2022 में 23 प्रति लाख जनसंख्या हो गई है।
- ध्यातव्य रहे, भारत ने इस बीमारी को खत्म करने के लिए 2025 तक का लक्ष्य रखा है।
- रिपोर्ट में जारी आंकड़ों के अनुसार, पिछले नौ वर्षों में वार्षिक आधार पर टीबी मामलों की समग्र अधिसूचना में 50% से अधिक का सुधार हुआ है, जबकि उत्तर प्रदेश में अधिसूचनाओं में सबसे अधिक उछाल देखा गया (पिछले वर्ष की तुलना में 21%)), उसके बाद बिहार (15%) का स्थान है।
- COVID-19 महामारी के बाद, राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम (NTEP) ने राष्ट्रीय रणनीतिक योजना (NSP) 2017-25 द्वारा निर्देशित, टीबी उन्मूलन में तेजी लाने की दिशा में एक यात्रा शुरू की।
- एनटीईपी ने 2023 में लगभग 1.89 करोड़ थूक स्मीयर परीक्षण और 68.3 लाख न्यूक्लिक एसिड एम्प्लीफिकेशन परीक्षण (एनएएटी) आयोजित करते हुए मुफ्त नैदानिक सेवाएं प्रदान करना जारी रखा।
- निक्षय पोषण योजना के तहत प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डीबीटी) ने टीबी रोगियों को वित्तीय सहायता प्रदान करना जारी रखा, लगभग एक करोड़ लाभार्थियों को लगभग 2,781 करोड़ रुपये वितरित किए गए।

विश्व क्षय रोग दिवस-2024

सुर्ख़ियों में क्यों?

- प्रतिवर्ष 24 मार्च को विश्व क्षय रोग दिवस मनाया जाता है। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य क्षय रोग के कारण होने वाले विनाशकारी सामाजिक और आर्थिक प्रभावों के बारे में जन जागरूकता बढ़ाना है।

संबंधित प्रमुख बिंदु

- विश्व क्षय रोग दिवस 2024 की थीम है - 'हां ! हम टीबी ख़त्म कर सकते हैं !' (Yes! We can end TB)।
- इस दिवस को मनाने का प्रस्ताव इंटरनेशनल यूनियन अगेंस्ट ट्यूबरकुलोसिस एंड लंग डिजीज (IUATLD) ने दिया था, जिसके बाद यह विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा चिह्नित किया गया।
- गौरतलब है कि डॉ. रॉबर्ट कोच ने 24 मार्च को तपेदिक पैदा करने वाले जीवाणु के खोज की पुष्टि की थी। इस खोज को चिह्नित करने के लिए हर साल 24 मार्च को विश्व तपेदिक दिवस मनाया जाता है।
- संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार हर दिन लगभग 4,000 लोग TB के कारण जान गंवाते हैं। इसके अलावा 30,000 लोग इस बीमारी से बीमार होते हैं।

तपेदिक (टीबी) के बारे में

- टीबी एक संक्रामक बीमारी है जो माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस (Mycobacterium tuberculosis') नामक जीवाणु के कारण होता है|
- इसे यक्ष्मा, तपेदिक, क्षयरोग भी कहा जाता है|
- टीबी आमतौर पर फेफड़ों को प्रभावित करता है, लेकिन अन्य अंगों को भी प्रभावित कर सकता है| टीबी का संचरण एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में हवा (छींक, थूक, खांसी) के माध्यम से होता है।
- बीसीजी (BCG) टीबी की रोकथाम के लिए उपलब्ध एकमात्र टीका है जिसका प्रयोग पहली बार 1921 में मनुष्यों में किया गया था। भारत में, इसे 1948 में पेश किया गया था और 1962 में राष्ट्रीय टीबी नियंत्रण कार्यक्रम का एक हिस्सा बन गया।
- भारत ने तपेदिक उन्मूलन (2017-2025), निक्षय पारिस्थितिकी तंत्र, निक्षय पोषण योजना, टीबी हारेगा देश जीतेगा अभियान के लिए राष्ट्रीय रणनीतिक योजना भी शुरू की है।
- ध्यातव्य है कि भारत का लक्ष्य 2025 तक टीबी के मामलों को खत्म करना है। ज्ञात हो कि वैश्विक स्तर पर वर्ष 2030 तक टीबी उन्मूलन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है|